म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

भाषा और साक्षरता

कक्षा में बहुभाषावाद

भारत में विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K./10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्‌देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रक्रिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0* *LL12v1*
Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई कई कक्षाओं की उस वास्तविकता के बारे में है जहाँ विद्यार्थियों की मातृभाषा और विद्यालय की भाषा समान नहीं होती है। ऐसी परिस्थितियों को प्रायः चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इस इकाई का उद्देश्य बहुभाषावाद के प्रति जागरूकता और सकारात्मक समझ को विकसित करना है, जिसके अंतर्गत यह बतलाया गया है कि बहुभाषावाद के माध्यम से भाषा कक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ाया जा सकता है।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- शिक्षण के संसाधन के रूप में अपने विद्यार्थियों के लिए बहुभाषावाद का उपयोग कैसे करें ?
- अपने कक्षा शिक्षण में सभी विद्यार्थियों को उनकी भाषाओं में सीखने के अवसर प्रदान करने की योजना कैसे तैयार करें ?
- कक्षा में 'भाषा अनुवाद' ('ट्रांसलैंग्वेजिंग') के लाभ ?

यह तरीका महत्वपूर्ण क्यों है

भारत सहित अधिकांश विश्व में विद्यालयों में बहुभाषी विद्यार्थी होना अपवाद नहीं अपितु सामान्य स्थिति हैं। एक से अधिक भाषा ज्ञान के संज्ञानात्मक और व्यावहारिक लाभ के कई शोध और प्रमाण हैं। इस प्रकार का ज्ञान अध्यापन और शिक्षण का अद्भुत साधन है। चाहे किसी भी विषय में विशेषज्ञता हो, प्रत्येक शिक्षक को अपने सभी विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान और कौशल की प्रशंसा, प्रचार और उसे निखारने के अवसरों की तलाश करनी चाहिए। एक भाषा और साक्षरता शिक्षक होने के नाते, ऐसा करना आपका विशेष उत्तरदायित्व है। यह इकाई दर्शाती है कि यह कैसे संभव है।

1 बहुभाषी कक्षा का प्रारंभ

गतिविधि 1: मुख्य सिद्धांत

बहुभाषी प्रसंगों में प्रभावी कक्षा अभ्यासों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण अनुसंधान की खोज के आधार पर अनुसरित होने वाले तीन कथनः

- विद्यार्थी उस भाषा में सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं जिसे वे सबसे अच्छी तरह जानते हैं।
- शिक्षक उस भाषा में सबसे प्रभावी ढंग से पढ़ाते हैं जिसमें उनकी सबसे अच्छी पकड़ होती है।
- प्रथम भाषा में जितना अधिक अध्यापन और शिक्षण होता है, शैक्षणिक परिणाम भी उतने ही उत्तम होते हैं।

यदि संभव हो, तो किसी साथी के साथ चर्चा करके नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें:

- एक शिक्षक के रूप में, अपने दैनिक कक्षा अभ्यास के अंतर्गत इन कथनों को एकीकृत करने में किस प्रकार की चुनौतियाँ सामने आती हैं?
- क्या आपकी कक्षा में आपके और आपके विद्यार्थी या विद्यार्थियों के बीच आपस में 'भाषा अंतर' की समस्या है? ऐसा है तोः
  - यह आपके अध्यापन और उनके अधिगम को कैसे प्रभावित करता है?
  - यह कक्षा में संबंधों को कैसे प्रभावित करता है?
- क्या आप अपने अध्यापन में अपने विद्यार्थियों की अन्य भाषाओं की स्वीकृति के लिए कुछ करते हैं? क्यों या क्यों नहीं?

उपर्युक्त तीन कथन उस सकारात्मक प्रभाव के उन्नत साक्ष्य को दर्शाते हैं जिसके अंतर्गत मातृभाषा में लंबे समय तक शिक्षण प्रदान करने से विद्यार्थियों की उपस्थिति और उनकी दीर्घकालिक शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण वृद्धि होती है।

हो सकता है आपके विद्यालय में पूर्ण रूप से मातृभाषा आधारित शिक्षण संभव नहीं हो, फिर भी आप अपने शिक्षण कार्य में कई ऐसे छोटे–मोटे परिवर्तन ला सकते हैं जिससे कक्षा में आपके विद्यार्थियों द्वारा उपयोग की जाने वाली मातृभाषा के संसाधनों में वृद्धि की जा सके।

केस स्टडी – 1: विद्यार्थियों का अवलोकन

मध्य प्रदेश के एक ग्रामीण विद्यालय में कक्षा I और II के शिक्षक, श्री धर्मेंद्र बताते हैं कि अपने विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में संवाद करते देख उन्हें कैसा लगा

विद्यालय में अपनी मातृभाषा के उपयोग को लेकर मेरा अपने विद्यार्थियों के प्रति बहुत नकारात्मक व्यवहार रहता था। मुझे लगा कि उन्हें विद्यालयी भाषा सिखाने की सर्वश्रेष्ठ विधि उस भाषा को सुनाना और उसका हमेशा उपयोग करना है। मेरा मानना था कि विद्यालय में

भाषाओं का मिश्रण उन्हें उलझाकर रख देगा। संभवतः सच्चाई ये थी कि मैं उनकी मातृभाषा को बहुत कम समझ और बोल पाता था और यही कारण था कि कक्षा में उस भाषा का उपयोग मुझे असहज बनाता था।

कक्षा I और कक्षा II के मेरे कुछ विद्यार्थी मेरे शिक्षण के समय बहुत शांत रहते थे। मेरे लिए यह समझ पाना बहुत मुश्किल होता था कि वे समझ और पढ़ पा रहे हैं या नहीं।

एक दिन सुबह, मैंने देखा कि दो सामान्यतः अल्पभाशी विद्यार्थी जिन्हें मैंने एक साथ रखा था, किसी हिंदी पाठ्य सामग्री के बारे में अपनी मातृभाषा निमाड़ी में खुलकर बातें कर रहे थे। दोपहर के खाने के समय, मैंने सुना कि एक बहुत ही संकोची छात्र, खेल के मैदान में अपने मित्रों को हाल ही में पढ़ाए गए विज्ञान–संबंधित सिद्धांत के बारे में चित्रों के माध्यम से अपनी मातृभाषा भीली में समझा रहा था। दिन के अंत में, मैंने देखा कि एक बच्चा जो आमतौर पर बातें नहीं किया करता था, अपने दादाजी को अपनी मातृभाषा मालवी में वह कहानी सुना रहा था जिसे मैंने अपनी कक्षा में हिन्दी में पढ़ाया था।

वे बच्चे जिस तरह अपनी सर्वश्रेष्ठ जानकारी वाली भाषा में एक दूसरे के साथ संवाद कर रहे थे, तब मैं उनके आत्मविश्वास, क्षमता और बुद्धि और सामाजिक गुणों को देखकर दंग रह गया। मुझे एहसास हुआ कि मुझे उनके इस गुण को उन्हें कक्षा में भी दिखाने के अवसर देना चाहिए।

विचार कीजिए

प्रत्येक दिन उन विद्यार्थियों को ध्यान से देखने और सुनने का समय निकालें जो वैसे तो कक्षा में शांत रहते हैं लेकिन अपनी ज्ञात भाषा में एक दूसरे के साथ खुलकर बातें करते हैं। वे किस प्रकार के गुण और व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं, जिनके बारे में शायद आपको पहले कभी नहीं पता था?

अब अपनी कक्षा की गतिविधियों में अपने सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित करके संसाधन 1 पढ़ें।

वीडियो : सभी की सहभागिता

2 कक्षा में बहुभाषावाद को महत्व देना

गतिविधि 2: एक कक्षा भाषा सर्वेक्षण

अपनी कक्षा में एक भाषा सर्वेक्षण आयोजित करें। विद्यार्थियों के साथ उन भाषाओं के बारे में बातचीत करके प्रारंभ करें, जिन्हें आप जानते हैं – शायद यह बताकर शुरु करें कि आप कुछ शब्दों को समझ सकते हैं, भाषा को धाराप्रवाह बोल या लिख सकते हैं – और उन्हें यह समझाएँ कि आपने यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त किया है, उदाहरण के लिए अपने माता–पिता या दादा–दादी से सीखा है, या उसे किसी विशेष स्थान पर रहकर सीखा है, अथवा विद्यालय में पढ़कर सीखा है।

बड़ी सीट का उपयोग करें और एक बड़ी तालिका बनाएँ। बाईं ओर विद्यार्थियों के नाम और ऊपर दी गई भाषाओं की सूची के बाद अपना नाम लिखें। अपने विद्यार्थियों को यह बताने के लिए आमंत्रित करें कि वे कौन–सी भाषाएँ जानते हैं और चार्ट पर यथानुसार सही का चिह्न बनाएँ। कार्य पूर्ण होने पर सर्वेक्षण चार्ट कक्षा की दीवार पर लगाएँ।

अगर कोई विद्यार्थी सर्वेक्षण के दिन अनुपस्थित रहा हो तो उसके वापस आने पर उसे चार्ट के बारे में अपडेट करें। वर्ष के दौरान कक्षा में भर्ती होने वाले किसी नए विद्यार्थी के लिए निचले भाग पर अतिरिक्त पंक्तियों का प्रावधान रखें। हो सकता है कि आप प्रधानाध्यापक और अन्य कर्मचारी सदस्यों के साथ सर्वेक्षण करना चाहें और उस जानकारी को भी शामिल करना चाहें।

अपने विद्यार्थी की आयु के आधार पर आप इस बात पर ध्यान देते हुए इस सर्वेक्षण को अधिक विस्तृत कर सकते हैं, कि क्या वे उल्लिखित भाषाओं को समझते हैं, बोलते हैं, पढ़ या लिख लेते हैं।

विचार कीजिए

- क्या आपके विद्यार्थी अपने भाषा ज्ञान को साझा करते समय खुश थे?
- क्या आपको यह पता लगाने में किसी भी कठिनाई का सामना करना पड़ा कि आपके विद्यार्थी कौन–कौन सी भाषाएँ जानते हैं? अगर ऐसा था, तो वे कौन–कौन सी भाषाएँ थीं?
- आप अपने विद्यार्थियों के साथ फ़ॉलो–अप (अनुसरण) गतिविधि के रूप में क्या कर सकते थे?

दलित वर्ग की भेदभावपूर्ण धारणाओं का आशय यह हो सकता है कि कुछ विद्यार्थी इन समुदायों से संबंधित कुछ भाषाओं को जानने की 'सहमति' दर्शाने के लिए अनिच्छुक हों। इसलिए, इस गतिविधि में इस बात पर सकारात्मक रूप से ज़ोर देना ज़रूरी है, कि विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का ज्ञान आमतौर पर लोगों के जीवन में और खासकर कक्षा के लिए मूल्यवान होता है। अल्पसंख्यक वर्ग की भाषाओं के अपने खुद के ज्ञान के बारे में बात करें, उस स्थिति में भी अगर वह सीमित हो या उन्हें सीखने की आपकी इच्छा हो।

यह तथ्य कि भाषाओं और बोलियों के बीच का भेद प्रायः परिवर्तनीय रहता है या यह संभावना कि हो सकता है कि विद्यार्थियों को उन भाषाओं के नामों की जानकारी न हो जिन्हें वे बोलते हैं, ये ऐसे अन्य कारण हैं जिनकी वजह से इस प्रकार के ज्ञान के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त करने के लिए, हमेशा चीज़ें स्पष्ट नहीं रहती हैं। इसलिए, आपके चार्ट को एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में देखा जाना चाहिए, जिसकी जानकारी को विद्यार्थियों के सहयोग से समय समय पर संशोधित किया जाएगा।

केस स्टडी – 2ः स्थानीय भाषा के शब्दों का उपयोग करना

मध्य प्रदेश की निम्नलिखित केस स्टडी में, एक शिक्षक द्वारा यह वर्णन किया गया है कि उनके कुछ विद्यार्थी दीवार पर लगे वर्णमाला चार्ट पर दिए गए अक्षरों को चित्रित करने के लिए उपयोग किए गए शब्दों से कैसे भ्रमित हो गए थे।

मेरे अधिकांश विद्यार्थी गोडी भाषा ही बोलते हैं और जब वे पहली बार इस स्कूल में आए, तो उन्हें हिंदी के बहुत कम शब्दों के बारे में पता था। मैंने देखा कि कुछ विद्यार्थी कक्षा की दीवार पर लगे हिंदी वर्णमाला चार्ट में दिए गए चित्रों द्वारा दर्शाए गए शब्दों को त्रुटि पूर्ण ढ़ंग से बता रहे थे। उन्होंने 'हल' ('हल' के लिए हिंदी भाषा का शब्द) की बजाय ('हल' के लिए गोंडी भाषा का शब्द) कहा। जब मैंने उनसे पूछा कि यह कौन सा अक्षर है, तो विद्यार्थियों ने मुझसे कहा कि यह 'न' है, जो कि 'हल' के लिए हिंदी भाषा के पहले अक्षर 'ह' की बजाय गोंडी भाषा में 'हल' का पहला अक्षर था।

चित्र 1 हल।

यह आपके विद्यार्थियों की मातृभाषा की वर्णमाला के कौन से अक्षर को दर्शाता है?

मैं जानता था कि हिंदी अक्षरों के नामों और उच्चारणों को ठीक से सिखाने के लिए मुझे अपने विद्यार्थियों की सहायता करनी थी, इसलिए मैंने गोंडी भाषा के शब्दों का उपयोग करते हुए एक वर्णमाला चार्ट तैयार किया। इस तरीके से वे हिंदी वर्णमाला के अक्षरों के उच्चारणों को ज्यादा आसानी से सीख पाए। उसके बाद मैंने उन्हें हिंदी के चित्रित शब्दों को भी सीखने में उनकी सहायता की। इससे उन्हें अपने हिंदी शब्द संग्रह को तैयार करने में भी सहायता मिली।

यह केस स्टडी पढ़ने के बाद, अब निम्न दो गतिविधियों को आज़माएँ, जो आपकी कक्षा में बहुभाषावाद पर केंद्रित हैं।

गतिविधि 3ः एक वर्णमाला चार्ट तैयार करना

क्या हिंदी वर्णमाला चार्ट को दर्शाने वाले चित्रों द्वारा प्रस्तुत शब्दों से आपके कम उम्र कोई विद्यार्थी भ्रमित हो सकते हैं?

उनकी मातृभाषा से उपयुक्त शब्द खोजें और एक ऐसी वर्णमाला चार्ट या पुस्तक तैयार करने के लिए उनका उपयोग करें जो आपके विद्यार्थियों को हिंदी अक्षर सिखाने में सहायता करे। अगर आप उनकी मातृभाषा से पर्याप्त रूप से परिचित नहीं हैं, तो उपयुक्त शब्दों के

सुझाव के लिए सहकर्मियों, समुदाय के सदस्यों या स्वयं विद्यार्थियों से पूछें। अपने विद्यार्थियों को उस चार्ट या पुस्तक में चित्र काटकर चिपकाने की गतिविधि में शामिल करें।

गतिविधि 4: अपनी कक्षा में बहुभाषी अभ्यास को संयोजित करना

आप उन भिन्न–भिन्न भाषाओं को कैसे स्वीकार कर सकते हैं और महत्व दे सकते हैं, जिन्हें विद्यार्थी कक्षा में लेकर आते हैं?

विचारों की एक सूची बनाएं। प्रेरणा के लिए अपने सहकर्मियों से बात करें या उनकी कक्षाओं में जाएँ। अगले महीने अपनी कक्षा में लागू करने के लिए किसी एक को चुनें। कुछ सुझाव नीचे सूचीबद्ध किए गए हैं।

अभिवादन

अपने बहुभाषी विद्यार्थियों से कहें कि वे अपने सहपाठियों को अपनी मातृभाषा में अभिवादन करना सिखाएँ। दैनिक पूछताछ की प्रक्रिया विकसित करें, दिन की शुरुआत में आप अपने विद्यार्थियों का अभिवादन स्कूल की भाषा में करते हैं और फिर उनमें से प्रत्येक की मातृभाषा में, जिसमें उसी के अनुसार पूरी कक्षा अभिवादनों का एक–एक करके जवाब देती है। स्कूल की समाप्ति पर अलविदा कहते समय यही प्रक्रिया अपनाएँ।

नाम की पट्टी

अपनी कक्षा के स्थानों व वस्तुओं (जैसे कि खिड़की, दरवाज़ा, ब्लैकबोर्ड, अलमारी) पर हिंदी और अपने विद्यार्थियों की मातृभाषा, दोनों भाषाओं में नाम पट्टी लगाएँ। अलग–अलग भाषाओं में अंतर करने में सहायता हेतु अलग–अलग रंगों वाले पेन या कार्ड का उपयोग करें। अगर आपके बहुभाषी विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में साक्षर हैं, तो वे स्वयं नाम पट्टी लिखने में सहायता कर सकते हैं।

बहुभाषी शब्द दीवार

अपने विद्यार्थियों की मातृभाषा में उपयोगी शब्दों और अभिव्यक्तियों (उदाहरण के लिए, 'नमस्कार', 'अलविदा', 'क्षमा करें', 'आपका धन्यवाद') को पोस्ट करके अपनी कक्षा में एक विकासशील शब्द दीवार बनाएँ। नए शब्दों का योगदान करने के लिए, अपने विद्यार्थियों को आमंत्रित करने के अवसर तलाश करें। उपर्युक्त नाम की पट्टियों की तरह, भाषाओं में अंतर करने के लिए अलग–अलग रंगों वाले पेन या कार्ड का उपयोग करें।

बहुभाषी पठन सामग्री

उन भाषाओं में पुस्तकों, पत्रिकाओं, लघुपत्रों और अन्य पठन सामग्री का संग्रह प्रारंभ करें, जिन्हें आपके विद्यार्थी बोलते हैं और इन वस्तुओं को अपने पठन कोने में शामिल कर दें (चित्र 2)।

चित्र 2 पठन कोने में मौजूद विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री।

बहुभाषी शब्दकोश

अपने विद्यार्थियों को द्विभाषीय या बहुभाषी शब्दकोश तैयार करने की गतिविधि में शामिल करें। आपके विद्यार्थियों की ज़रूरतों पर निर्भर करते हुए, ये शब्दकोश आसान शब्दों और चित्रों, रोज़मर्रा के विषयों (जैसे कि स्कूल, घर, पार्क, शरीर के अंग, जानवर) से संबंधित शब्दसंग्रह या विषय–विशिष्ट शब्दों (उदाहरण के लिए, गणित, विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान से संबंधित) पर केंद्रित हो सकते हैं।

अगर आपके विद्यार्थी अंग्रेज़ी या हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं, तो वे एक ऐसा बहुभाषी शब्दकोश संकलित कर सकते हैं, जिसमें शब्दों को अंग्रेज़ी, हिंदी और उनकी मातृभाषा में सूचीबद्ध किया गया हो। उन शब्दकोशों को ऐसी जगह पर रखें जहाँ से आपके सभी विद्यार्थी उनका उपयोग कर सकें। नए शब्दों की एक सूची तैयार करें और अपने विद्यार्थियों के लिए कुछ समय निर्धारित करें ताकि वे नियमित रूप से इन और अन्य शब्दों को उस शब्दकोश में शामिल कर सकें।

3 कक्षा में भाषा अनुवाद

'भाषा अनुवाद' तुलनात्मक रूप से पुराने अभ्यास के लिए एक नया शब्द है – जिसमें ऐसी भाषाओं, जिनके बारे में किसी को जानकारी हो, को दूसरी भाषा में बदला जाता है, ताकि संचार की संभावना को अधिकतम किया जा सके। भाषा अनुवाद एक लचीला बहुभाषावाद है। एक ही उच्चारण में चाहे इसमें भिन्न–भिन्न भाषाओं के संयोजन तत्व शामिल हों या नहीं ('कोड–स्विचिंग') या किसी कार्य के भिन्न–भिन्न हिस्सों में भाषाओं के बीच अदला–बदली करना, यह किसी व्यक्ति के भाषायी संसाधनों को उनके सर्वोत्तम प्रभाव के साथ नियोजित करने का एक स्वाभाविक माध्यम है। यह इसलिए उत्पन्न होता है, क्योंकि व्यक्ति किसी कथित भाषा को किसी विशिष्ट कार्य, विषय या परिस्थिति से संबद्ध कर देते हैं या क्योंकि कुछ अवधारणाएँ (जैसे कि 'इंटरनेट') सामान्यतः किसी भाषा विशेष में अधिक व्यक्त की जाने वाली समझी जाती हैं या क्योंकि यह मनोरंजक और हास्यास्पद हो सकता है। भाषा अनुवाद ऐसी चीज़ है जिसका उपयोग अधिकांश लोग, यहाँ तक कि इसके बारे में कुछ सोचे बिना, अपने मित्रों, परिवार और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ हर समय करते रहते हैं।

कक्षा में, भाषा अनुवाद में निम्नलिखित बातें हो सकती हैं:

- भाषाओं के बीच अनुवाद करना
- भिन्न–भिन्न भाषाओं के साथ तुलना करना और आनंदित बने रहना
- बोले और लिखे जाने वाले समान उच्चारण में भिन्न–भिन्न भाषाओं से शब्दों और अभिव्यक्तियों को मिश्रित करना
- किसी गतिविधि के एक हिस्से में मातृभाषा का उपयोग करना और दूसरे हिस्से में स्कूल की भाषा का उपयोग करना।

इस प्रकार, विद्यार्थी जानकारी को एक भाषा में सुन सकते हैं और उसके भावार्थ को दूसरी भाषा में मौखिक रूप से समझा सकते हैं या उसके लिखित नोट बना सकते हैं। इसी प्रकार वे एक भाषा में कोई पाठ्य पढ़ सकते हैं और दूसरी भाषा में उसके बारे में बात कर सकते हैं या लिखित रूप में उसे सारांशित कर सकते हैं।

शिक्षकों और विद्यार्थियों, दोनों के लिए एक संसाधन के रूप में भाषा अनुवाद के कई शैक्षणिक लाभ हैं, क्योंकि यहः

- बहुभाषावाद को, उसे किसी समस्या की बजाय एक मूल्यवान संपत्ति के रूप में देखने हेतु या आरंभिक अध्यापन के समय एक अस्थायी सहभागिता वाले उपकरण को मान्य बनाता है
- केवल एक भाषा में संभावित तकनीक की तुलना में एक अधिक कुशल और प्रभावी अध्यापन और शिक्षण तकनीक प्रस्तुत करता है
- स्कूल के अंदर और बाहर उपयोग हेतु व्यापक और विविध संचारात्मक रंगपटल विकसित करने के लिए, व्यक्तियों को अवसर प्रदान करता है।

केस स्टडी – 3 कक्षा में भाषा अनुवाद

श्रीमती इंद्रा, भोपाल से बाहर के एक ग्रामीण स्कूल की कक्षा IV की अध्यापिका, यह बताती हैं कि उन्होंने अपनी भाषा के अध्यायों में भाषा अनुवाद को शामिल करने की शुरुआत कैसे की है।

मेरे अधिकांश विद्यार्थियों की पहली भाषा हिंदी नहीं है। चूँकि मैंने तीन महीने पहले उनकी भाषा के अध्यायों में उनके भाषा अनुवाद अभ्यासों को सम्मिलित करने की शुरुआत की, इसलिए अब वे अपने शिक्षण में और भी अधिक बहुभाषी हो गए हैं और जुड़ चुके हैं। हिंदी भाषा में भी उनका आत्मविश्वास काफ़ी हद तक बेहतर हुआ है। मैंने यह देखा है कि मेरी कक्षा के एकभाषी हिंदी वक्ताओं ने अपने सहपाठियों के शब्दों और वाक्यों को भी अपनाना शुरू कर दिया है।

अगर मेरे विद्यार्थी अपनी हिंदी पाठ्यपुस्तिका के किसी अनुभाग या पृष्ठ को पढ़ने जा रहे हों, तो मैं उस विषय के परिचय के साथ शुरुआत करती हूँ, अपने उन विद्यार्थियों को आमंत्रित करती हूँ, जिसे उस विषय के बारे में कुछ भी पता हो स्वयं से बताएँ और उन्हें प्रोत्साहित करती हूँ कि वे मुख्य हिंदी शब्द संग्रह को अपनी मातृभाषा में अनुवादित करें। अगर मुझे उनकी बातें समझ नहीं आती हैं, तो मैं उनसे मेरी सहायता करन के लिए कहती हूँ।

उसके बाद मैं, अपने विद्यार्थियों से जोड़ी में या छोटे–छोटे समूहों में अपनी हिंदी पाठ्यपुस्तिका के किसी अनुभाग या पृष्ठ को ज़ोर या उन्हें खुद से धीरे–धीरे या मुक्त रूप से पढ़ने के लिए कहती हूँ। किसी भी स्थिति में, मैं प्रत्येक पृष्ठ या अनुभाग की समाप्ति पर रुकने के लिए कहती हूँ और उन लोगों ने जो पढ़ा है, उसमें से सभी अपरिचित शब्दों का आशय निकालते हुए और उनका अर्थ समझाते हुए, उसे अपने भागीदार या अन्य समूह के सदस्यों के साथ चर्चा करने के लिए कहती हूँ। मैं उन्हें सुझाव देती हूँ कि वे इसके लिए अपनी मातृभाषा का उपयोग करें। मैं उन्हें उनके द्वारा निर्मित शब्दकोश में सभी नए शब्दों या अभिव्यक्तियों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

अगर मैं यह चाहूँ कि विद्यार्थियों के जोड़े या समूह बाकी कक्षा के सामने स्कूल की भाषा में कुछ प्रस्तुत करें, तो मैं उन्हें सबसे पहले यह चर्चा करने के लिए अपनी भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ, कि वे अपने विचारों को कैसे व्यक्त करेंगे। अगर मैं उनसे स्कूल की भाषा में कोई सारांश या रिपोर्ट लिखवाना चाहूँ, तो मैं ऐसा ही करती हूँ।

अपने सभी विद्यार्थियों की दिलचस्पी को कायम रखने के लिए, मैं यह सुनिश्चित करते हुए, जोड़ों और समूहों की व्यवस्था में अंतर करने का प्रयास करती हूँ, कि वे हर बार समान मातृभाषा के कम से कम दो विद्यार्थियों को शामिल करें। कभी–कभी मैं स्कूल की भाषा में समान क्षमता वाले विद्यार्थियों को एक साथ रखती हूँ। बाकी समय मैं आत्मविश्वास से भरे विद्यार्थी को कम आत्मविश्वासी विद्यार्थी के साथ रखती हूँ, ताकि साझा मातृभाषा में पुराना विद्यार्थी, नए विद्यार्थी की मदद कर सके। अगर उस समूह में कोई ऐसा विद्यार्थी है, जो साझा मातृभाषा नहीं बोलता है, तो मैं यह सुनिश्चित करती हूँ, कि मेरे विद्यार्थी जो भी चर्चा कर रहे हों, उसे स्कूल की भाषा में अनुवादित कर लें।

हाल ही में मैंने एक ऐसी पारंपरिक लघु कहानी प्रस्तुत की, जो हिंदी और मेरे विद्यार्थियों की मातृभाषा में उपलब्ध थी। मैंने इसका उपयोग अपनी कक्षा VII के विद्यार्थियों के साथ किया। मैंने हर भाषा में इन कहानियों की प्रतिलिपियाँ तैयार की और विद्यार्थियों के छोटे–छोटे समूहों द्वारा उन्हें एक साथ पढ़वाया। उसके बाद मैंने उन्हें दो कहानियों के भिन्न–भिन्न संस्करणों की तुलना करने के लिए, प्रत्येक में प्रयुक्त मुख्य शब्दों सहित, अपनी मातृभाषा का उपयोग करने के लिए कहा।

चित्र 3 विद्यार्थी अपनी मातृभाषा का उपयोग करके जोड़ों में किसी विषय की चर्चा करते हैं।

विचार कीजिए

- ध्यान दें कि श्रीमती इंद्रा ने अपने विद्यार्थियों को इन गतिविधियों के किन–किन हिस्सों का अपनी मातृभाषा में और किन–किन हिस्सों का स्कूल की भाषा में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। क्या यहाँ उनका कोई पैटर्न दिया गया है?
- इस केस स्टडी में वर्णित भाषा अनुवाद अभ्यासों का समर्थन करने के लिए, श्रीमती इंद्रा ने किन–किन निर्देशों का पालन किया होगा? आप जिनके बारे में सोच सकते हैं, उनकी एक सूची बनाएँ।

यहाँ कुछ संभावनाएँ दी गई हैं:

- 'हिंदी में हम ....कहते हैं, [आपकी मातृभाषा] में इसे ....कहते हैं।'
- 'आप [आपकी मातृभाषा] में को क्या कहते हैं?'
- 'इस विषय से संबंधित [मातृभाषा] के कौन–कौन से शब्दों के बारे में आपको पता है?'
- 'जोड़ों में कार्य करें। एक विद्यार्थी ने कहा कि हिंदी के इस शब्द का अर्थ, [उनकी मातृभाषा] में कुछ और होता है। उसके बाद, उन्हें परिवर्तित करें।'
- 'मैं' हिंदी में एक प्रश्न करने जा रही हूँ। आप उसका उत्तर [अपनी मातृभाषा में] दे सकते हैं।'
- 'आप [आपकी मातृभाषा] में आरंभ करते हुए, हिंदी में जारी रख सकते हैं।'
- 'आप अपने जोड़ों [या समूहों] में इस विषय की चर्चा करने के लिए, [आपकी मातृभाषा] का उपयोग कर सकते हैं और उसके बाद कक्षा में अपनी रिपोर्ट वापस हिंदी में दे सकते हैं।'
- 'अब हमारे पास [आपकी मातृभाषा में]प्रश्न करने के लिए कुछ समय है।'
- 'अपनी नोटबुक में नए शब्दों की एक सूची बनाएँ। बाईं ओर हिंदी शब्द लिखें और उसके समान कोई शब्द [मातृ भाषा] में दाईं ओर लिखें।'

(सिंपसन, 2014 से लिया गया)

गतिविधि 5: आपकी कक्षा में भाषा अनुवाद को सम्मिलित करना

किसी ऐसे आगामी भाषा पाठ का चिन्हित जिसमें आप अपने कक्षा अभ्यास में भाषा अनुवाद को प्रस्तुत कर सकते हैं। उस प्रत्येक गतिविधि को नोट कर लें, जिसमें स्कूल की भाषा का या विद्यार्थी की मातृभाषा का उपयोग सबसे उचित रहेगा। विचार करें कि अपने विद्यार्थियों के जोड़े या समूह कैसे बनाएँ। अध्याय योजना बनाना, निर्देशात्मक वाक्यों की समीक्षा करना और उनका अभ्यास करना (ऊपर देखें)। अगर संभव हो तो अपने साथी के साथ अपनी योजना साझा करें।

जब आप तैयार हो जाएँ, तो अध्याय को लागू करें। अपने विद्यार्थियों को यह समझाते हुए शुरुआत करें, कि भाषा अनुवाद के क्या–क्या लाभ हैं और आप उन्हें ऐसा करने के लिए क्यों प्रोत्साहित करना चाहते हैं। इस गतिविधि के प्रत्येक चरण के लिए, उन्हें स्पष्ट निर्देश दें। उनकी मातृभाषा के उनके उपयोग के लिए, सहायता करते हुए उत्तर दें।

हो सकता है आपको मुख्य संसाधन 'पाठ की योजनाा बनाना अच्छा लगे।

वीडियो : पाठ की योजनाा बनाना

विचार कीजिए

- कक्षा में आपके विद्यार्थियों ने भाषा अनुवाद के उनके शुरुआती अनुभवों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दी?
- आपके लिए यह अनुभव कैसे भिन्न था?

जब आप अपने शिक्षण अभ्यास में भाषा अनुवाद का परिचय कराते हैं तो इसे अपने पाठों में लगातार शामिल करना महत्वपूर्ण है ताकि आपके विद्यार्थी नियमित आधार पर अपने अधिगम में अपनी मातृभाषा के उपयोग को स्वीकार करने के लिए विश्वास हासिल कर सकें।

4 सारांश

इस इकाई में बहुभाषावाद के उपयोग के तरीकों पर चर्चा की गई है जिन्हें आपको और आपके विद्यार्थियों को शिक्षण, अधिगम और समावेशन के संवर्धन के लिए विद्यालय में लेकर आना है। इसने आपको कक्षा भाषा सर्वेक्षण आयोजित करने, बहुभाषीय कक्षा परिवेश का निर्माण करने एवं आपके भाषा पाठों में भाषा अनुवाद गतिविधियों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार के निरंतर अभ्यास का आपके विद्यार्थियों के सामाजिक, संज्ञानात्मक और संचारपरक विकास पर स्थायी सकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

संसाधन

संसाधन 1 – सभी की सहभागिता

सहभागिता

संस्कृति और समाज की विविधता कक्षा में प्रतिबिंबित होती है। विद्यार्थियों की भाषाएँ, रुचियाँ और योग्यताएँ अलग–अलग होती हैं। विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। हम इन विभिन्नताओं को अनदेखा नहीं कर सकते हैं; वास्तव में हमें उन्हें सकारात्मक रूप से देखना चाहिए क्योंकि हमारे लिए ये एक दूसरे के बारे में तथा हमारे अनुभव से परे के संसार को जानने और समझने के लिए माध्यम का काम कर सकते हैं। सभी विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने एवं अपनी स्थिति, योग्यता और पृष्ठभूमि से इतर जाकर सीखने का अवसर हासिल करने का अधिकार है, और इस बात को भारतीय कानून में एवं अंतरराष्ट्रीय बाल अधिकारों में मान्यता प्राप्त है। 2014 में राष्ट्र के नाम अपने पहले संबोधन में, प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के सभी नागरिकों के मूल्यों, मान्यताओं को महत्व दिए जाने पर बल दिया भले ही किसी नागरिक की जाति, लिंग या आय कुछ भी क्यों न हो। इस संबंध में विद्यालयों और अध्यापकों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है।

हम सभी के पास उन दूसरे लोगों को लेकर पूर्वग्रह और विचार होते हैं जिनसे हमारा परिचय या साक्षात्कार नहीं हुआ हो सकता है। एक अध्यापक के रूप में, आपके पास प्रत्येक विद्यार्थी के शैक्षिक अनुभव को सकारात्मक या नकारात्मक ढंग से प्रभावित करने की शक्ति होती है। चाहे जानबूझकर हो या अनजाने में, आपके निहित पूर्वग्रहों और विचारों का इस बात पर अवश्य प्रभाव होगा कि आपके विद्यार्थी कितनी बराबरी के साथ सीख रहे हैं। आप अपने विद्यार्थियों को असमान व्यवहार से सुरक्षित करने के लिए कदम उठा सकते हैं।

आपके द्वारा अधिगम में सभी को शामिल करना सुनिश्चित करने के लिए तीन प्रमुख सिद्धांत

- **ध्यान देना:** प्रभावी अध्यापक सतर्क, अनुभवी एवं संवेदनशील होते हैं; वे अपने विद्यार्थियों में होने वाले बदलावों पर *ध्यान* देते हैं। यदि आप चौकस हैं तो आप उन बातों पर ध्यान देंगे जब एक विद्यार्थी कुछ अच्छा करता है, जब उसे सहायता की आवश्यकता होती है और जब वह दूसरों के साथ जुड़ता है। आप अपने विद्यार्थियों में होने वाले परिवर्तनों का भी अनुभव कर सकते हैं जो उनकी घरेलू परिस्थितियों या अन्य समस्याओं के चलते प्रतिबिंबित हो सकते हैं। सभी को शामिल करने के लिए दैनिक रूप से अपने विद्यार्थियों पर, खास तौर पर उपेक्षित या प्रतिभागिता करने में असमर्थ महसूस कर सकने वाले विद्यार्थियों पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
- **आत्मसम्मान पर ध्यान केंद्रित करना:** अच्छे नागरिक वे होते हैं जो अपने स्वत्व को लेकर सहज होते हैं। उनमें आत्मसम्मान की भावना होती है, उन्हें अपनी शक्तियों और कमजोरियों का पता होता है और उनमें व्यक्तियों की पृष्ठभूमि के प्रति पूर्वाग्रह रखे बिना सकारात्मक संबंध स्थापित करने की योग्यता होती है। वे स्वयं का और दूसरों का सम्मान करते हैं। एक अध्यापक के रूप में, आपका युवा विद्यार्थियों के आत्मसम्मान पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है; अपनी इस शक्ति के बारे में जानें और प्रत्येक विद्यार्थी के अंदर आत्मसम्मान विकसित करने के लिए उसका प्रयोग करें।
- **लचीलापन:** यदि कोई विधि या गतिविधि आपकी कक्षा में किसी विशिष्ट विद्यार्थी, समूह या व्यक्ति के लिए काम नहीं कर रही है तो अपनी योजनाओं में बदलाव करने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहें। लचीली दृष्टि रखने से आप समायोजन करने में सक्षम होंगे जिससे आप अधिक प्रभावी ढंग से सभी विद्यार्थियों को सहभागी बना सकते हैं।

हर समय आपके द्वारा अपनाए जा सकने वाले दृष्टिकोण

- **अच्छा व्यवहार प्रस्तुत करना:** जातीयता, धर्म या लिंग का भेदभाव किए बिना अपने विद्यार्थियों के साथ अच्छे ढंग से व्यवहार कर उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करें। सभी विद्यार्थियों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें और अपने शिक्षण के माध्यम से यह बात स्पष्ट करें कि आप सभी विद्यार्थियों को एक समान महत्व देते हैं। उन सभी के साथ सम्मान से बात करें, उनके विचार उपयुक्त होने पर उसे महत्व दें और उन्हें सभी के लिए लाभप्रद कार्य लेने के द्वारा कक्षा के लिए जिम्मेदारी उठाने को प्रोत्साहित करें।
- **अधिक उम्मीदें:** योग्यता सीमित नहीं होती है; यदि विद्यार्थियों को उचित सहायता मिले तो वे सीख सकते हैं और प्रगति कर सकते हैं। यदि किसी विद्यार्थी को आपके द्वारा कक्षा में की जा रही गतिविधि समझने में मुश्किल हो रही है तो ऐसा न समझें कि वे अब कभी भी जान और समझ नहीं सकते। एक अध्यापक के रूप में आपकी भूमिका अच्छे ढंग से प्रत्येक विद्यार्थी को सीखने में मदद करने की होनी चाहिए। यदि आप अपनी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी से अधिक उम्मीद करते हैं तो आपके विद्यार्थियों में यह प्रबल धारणा बन सकती है कि यदि वे डटे रहते हैं तो अधिक सीखेंगे। अधिक उम्मीदें व्यवहार में भी दिखनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि उम्मीदें स्पष्ट हैं और विद्यार्थी एक दूसरे से सम्मानजनक व्यवहार करते हैं।
- **अपने शिक्षण में विविधता लाएं:** विद्यार्थी अलग अलग तरीकों से सीखते हैं। कुछ विद्यार्थियों को लिखना पसंद होता है; तो कुछ अन्य को अपने विचार निरूपित करने के लिए माइंड मैप या चित्र बनाना अच्छा लगता है। कुछ विद्यार्थी अच्छे श्रोता होते हैं; कुछ अन्य तब सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं जब उन्हें अपने विचार के बारे में बात करने का अवसर प्राप्त होता है। आप हर समय सभी विद्यार्थियों के अनुरूप नहीं कर सकते हैं लेकिन आप अपने शिक्षण में विविधता पैदा कर सकते हैं और विद्यार्थियों को उनके द्वारा किए जा सकने के लिए कुछ अधिगम गतिविधियों में से अपना विकल्प चुनने का अवसर दे सकते हैं।
- प्रतिदिन **की जिंदगी से अधिगम को जोड़ें:** कुछ विद्यार्थियों को वे बातें अपने प्रतिदिन की जिंदगी के लिए अप्रासंगिक लग सकती हैं जिन्हें आप उनसे सीखने के लिए कहते हैं। आप इसे यह सुनिश्चित करने के द्वारा संबोधित कर सकते हैं कि जब भी संभव हुआ आप उस अधिगम को उनके लिए प्रासंगिक संदर्भ से जोड़ कर दिखाएंगे और आप उनके खुद के अनुभव से उदाहरण द्वारा निरूपित करेंगे।
- **भाषा का उपयोग:** अपने द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा को लेकर सचेत रहें। सकारात्मक और प्रशंसात्मक भाषा का प्रयोग करें, विद्यार्थियों का उपहास न करें। हमेशा उनके व्यवहार पर टिप्पणी करें, न कि स्वयं उन पर। 'तुम मुझे आज परेशान कर रहे हो' जैसे वाक्य नितांत व्यक्तिगत

प्रकार के होते हैं, इसके बजाय आप इसे 'आज मुझे तुम्हारा व्यवहार कष्टप्रद लग रहा है। क्या कोई कारण है जिसके चलते ध्यान केंद्रित करने में तुम्हें मुश्किल हो रही है?' के रूप में बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकते हैं।

- **रूढ़िवादिता को चुनौती दें:** उन संसाधनों का पता लगाएं और प्रयोग करें जो लड़कियों को गैर–रूढ़िवादी भूमिकाओं में प्रस्तुत करता है या वैज्ञानिक आदि अनुकरणीय महिलाओं को विद्यालय में आने के लिए निमंत्रित करें। लिंग को लेकर आप अपनी स्वयं की रूढ़िवादिता के प्रति सचेत रहें; आप जानते हैं कि लड़कियां खेलकूद के क्षेत्र में भी भाग लेती हैं वहीं लड़के देखभाल वाले कार्यों में भी पाए जाते हैं, लेकिन प्रायः हम इन्हें अलग ढंग से व्यक्त करते हैं, क्योंकि हम इसी तरीके से समाज में बात करने के अभ्यस्त होते हैं।
- **एक सुरक्षित, सुखद अधिगम वातावरण का निर्माण करें:** यह जरूरी है कि सभी विद्यार्थी विद्यालय में सुरक्षित और प्रसन्नचित्त महसूस करें। आप ऐसी स्थिति में होते हैं जिसमें आप अपने विद्यार्थियों को एक दूसरे के लिए परस्पर सम्मान और मित्रतापूर्ण व्यवहार के लिए प्रोत्साहित कर प्रसन्नचित्त महसूस करा सकें। इस बात पर विचार करें कि अलग अलग विद्यार्थियों के लिए विद्यालय और कक्षा को किस तरह विशिष्ट बनाया जा सकता है। इस बारे में सोचें कि उन्हें कहां बैठने के लिए कहा जाना चाहिए और सुनिश्चित करें कि दृश्य या श्रवण बाधा या शारीरिक अक्षमता वाला कोई भी विद्यार्थी अपना पाठ पढ़ने और सीखने के लिए कहां बैठ सकता है। इस बात की जांच करें कि शर्मीले स्वभाव या आसानी से विचलित होने वाले विद्यार्थियों को आप किस तरह आसानी से अपनी गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं।

विशिष्ट शिक्षण दृष्टिकोण

ऐसे कई विशिष्ट दृष्टिकोण हैं जिनसे आपको सभी विद्यार्थियों को शामिल करने में मदद मिलेगी। इन्हें अन्य प्रमुख संसाधनों में और अधिक विस्तार से वर्णित किया गया है लेकिन यहां संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है:

- **प्रश्न** करना: यदि आप विद्यार्थियों को हाथ खड़े करने के लिए कहते हैं तो वही विद्यार्थी उत्तर देने को प्रवृत्त होते हैं। ऐसे कई अन्य तरीके भी हैं जिनसे के बारे में सोचने और प्रश्नों पर प्रतिसाद देने के लिए अधिक विद्यार्थियों को शामिल किया जा सकता है। आप विशिष्ट विद्यार्थियों से प्रश्न कर सकते हैं। कक्षा से कहें कि आप यह निर्णय लेंगे कि कौन उत्तर देगा, फिर आप सामने बैठे हुए विद्यार्थियों की अपेक्षा कक्षा में पीछे या किनारे में बैठे विद्यार्थियों से प्रश्न पूछें। विद्यार्थियों को 'सोचने के लिए समय' दें और विशिष्ट विद्यार्थियों से अपना योगदान देने के लिए कहें। विश्वास का निर्माण करने के लिए जोड़ी या समूहकार्य का प्रयोग करें ताकि आप संपूर्ण कक्षा चर्चा में हरेक को शामिल कर सकें।
- **मूल्यांकन:** रचनात्मक मूल्यांकन के लिए तकनीकों की श्रृंखला विकसित करें, इनसे आपको हरेक विद्यार्थी को बेहतर ढंग से जानने में सहायता मिलेगी। छिपी प्रतिभाओं और कमियों को उजागर करने के लिए आपको रचनात्मक होने की जरूरत है। कतिपय विद्यार्थियों एवं उनकी योग्यताओं के बारे में सामान्यीकृत विचारों के कारण कुछ धारणाएं बन जाती हैं जबकि रचनात्मक मूल्यांकन आपको सटीक जानकारी देगा। तब आप उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर प्रतिसाद देने के लिए बेहतर स्थिति में होंगे।
- **समूह कार्य एवं जोड़ी में कार्य:** सभी विद्यार्थियों को शामिल करने और उन्हें एक दूसरे को महत्व देने के लिए प्रोत्साहित करने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर इस बात पर सावधानीपूर्वक विचार करें कि किस तरह आप अपनी कक्षा को समूह में विभाजित कर सकते है या उनमें जोड़े बना सकते हैं। सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थियों को एक दूसरे से सीखने और अपनी सीखी बातों पर विश्वास का निर्माण करने के लिए अवसर प्राप्त है। कुछ विद्यार्थियों में एक छोटे समूह में अपने विचारों को व्यक्त करने और प्रश्न पूछने के लिए आत्मविश्वास होगा किंतु हो सकता है कि संपूर्ण कक्षा के सामने उन्हें अपने को खड़ा करने में झिझक हो।
- **विशिष्टीकरण:** अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग कार्य निर्दिष्ट करने से विद्यार्थियों को अपनी सीखी हुई जगह से शुरू करने और आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। समाप्ति रहित कार्य निर्धारित करने से सभी विद्यार्थियों को सफल होने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थियों को विभिन्न कार्यों में विकल्प प्रदान करने से उन्हें उस कार्य के प्रति उत्तरदायित्व का अहसास करने और अपने अधिगम के लिए उत्तरदायित्व लेने में मदद मिलेगी। व्यक्तिगत अधिगम आवश्यकताओं का ध्यान रखना कठिन होता है, खास तौर पर बड़ी कक्षा में लेकिन अलग अलग कार्यों और गतिविधियों का उपयोग कर इसे किया जा सकता है।

अतिरिक्त संसाधन

- Multilingual education research: http://blog.britishcouncil.org.in/towards-a-multilingual-education-research-partnership-for-india/
- Guide to language readiness in multilingual contexts (Jharkhand): https://www.academia.edu/7602970/Bhasha_Puliya_-_Guidebook_for_a_Childrens_Language_Readiness_Programme_in_multilingual_Jharkhand_India
- Bilingual dictionaries in Jharkhand:
  - https://www.academia.edu/4503737/Childrens_Bilingual_Picture_Dictionaries_-_Meri_Bhasha_mein_Meri_Duniya
  - https://www.academia.edu/4668458/Childrens_BILINGUAL_Picture_Dictionary_in_Santhali_language
- Useful websites for multilingual education in India and Asia, and globally:
  - http://www.nmrc-jnu.org/nmrc_about_us.html
  - http://www.mle-india.net/
  - http://www.unescobkk.org/index.php?id=222
  - http://www.mlenetwork.org/

संदर्भ / संदर्भग्रंथ सूची

Agnihotri, R.K. (2006) 'Identity and multilinguality: the case of India' in Tsui, A. and Tollefson, J.W. (eds) *Language Policy, Culture and Identity in Asian Contexts*. Mahwah, NJ: Lawrence Erlbaum Associates.

Agnihotri, R.K. (2007) 'Towards a pedagogical paradigm rooted in multilinguality', *International Multilingual Research Journal*, no. 1, pp. 1–10.

Agnihotri, R.K. (2009) 'Multilinguality and a new world order' in Mohanty, A.K., Panda, M., Phillipson, R. and Skutnabb-Kangas, T. (eds) *Multilingual Education for Social Justice: Globalizing the Local*. New Delhi: Orient BlackSwan.

Agnihotri, R.K. (2014) 'Multilinguality, education and harmony', *International Journal of Multilingualism*, vol. 11, no. 3, pp. 364–79.

Celic, C. and Seltzer, K. (2011) *Translanguaging: A CUNY-NYSIEB Guide for Educators*. New York, NY: The Graduate Center.

Canagarajah, A.S. (ed.) (2013) *Literacy as Translingual Practice: Between Communities and Classrooms*. New York, NY: Routledge.

García, O. (2011) *Bilingual Education in the 21st Century: A Global Perspective*. Chichester: John Wiley & Sons.

García, O., Skutnabb-Kangas, T. and Torres-Guzmán, M.E. (eds.) (2006) *Imagining Multilingual Schools: Languages in Education and Glocalization*. Clevedon: Multilingual Matters.

National Council of Educational Research and Training (undated) 'National focus group on problems of scheduled caste and scheduled tribe children' (online) NCF 2005 position paper. Available from: http://www.ncert.nic.in/html/pdf/schoolcurriculum/position_papers/position_paper_on_sc&st.pdf (accessed 18 November 2014).

National Council of Educational Research and Training (2006) 'National focus group on teaching of Indian languages' (online) NCF 2005 position paper. Available from: http://www.ncert.nic.in/html/pdf/schoolcurriculum/Position_Papers/Indian_Languages.pdf (accessed 18 November 2014).

Neaum, S. (2012) *Language and Literacy for the Early Years.* London: Sage.

Simpson, J. (2014) 'Empowering teachers by helping legitimise translanguaging practices in Rwandan classrooms', British Association of International and Comparative Education 2014 Conference, 8–10 September, University of Bath.

Skutnabb-Kangas, T. (2013) 'Mother-tongue-medium education' in Chapelle, C.A. (ed.) *The Encyclopedia of Applied Linguistics*. Oxford: Blackwell.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ है कि यह सामग्री TESS-India के भीतर अपरिवर्तित रूप में ही उपयोग की जा सकती है और इसका उपयोग बाद के किसी भी OER संस्करणों में नहीं हो सकता है। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतारूपी आभारः

आकृति 1: *द्विभाषी चित्र शब्दकोष*, M-TALL akhra, JTWRI, कल्याण विभाग, झारखंड सरकार से ली गई। (Figure 1: adapted from Bilingual Picture Dictionary, M-TALL akhra, JTWRI, Department of Welfare, Govt. of Jharkhand).

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत–भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन युनिवर्सिटी के साथ काम किया।